कीमत यन्त्र की सीमाएं — व्यवहारिक जीवन में कीमत यन्त्र के द्वारा आर्थिक क्रियाओं के संचालन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और ये सभी उद्देश्य नहीं प्राप्त कर पाता है। डा० बोल्डिंग के अनुसार कीमत यन्त्र में अन्य मानवीय रीतियों की भांति अनेक अपूर्णताएं है संक्षेप में हम कह सकते हैं कि इस प्रणाली की मुख्य सीमाएं निम्नलिखित हैं।

① अपूर्ण प्रतियोगिता में निष्क्रिय — कीमत प्रणाली के सफल संचालन के लिए यह आवश्यक है कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण प्रतियोगिता हो। परन्तु वास्तविक जीवन में एकाधिकार तथा अपूर्ण प्रतियोगिता ही क्रियाशील रहती है। फलतः कीमत यन्त्र सफलतापूर्वक कार्य नहीं कर पाता आर्थिक साधनों का आवंटन भी विवेकपूर्ण नहीं होपाता है।

② पूर्ण रोजगार की अवास्तविक मान्यता — कीमत यन्त्र की यह मान्यता भी अवास्तविक है कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति होती है। जबकि व्यवहार में हम देखते हैं कि अनेक साधन बेरोजगार या अर्द्ध बेरोजगार रहते हैं अतः स्वतन्त्र कीमत प्रणाली में मानवीय तथा भौतिक साधनों का पूरी तरह उपयोग नहीं होपाता है।

③ साधनों में गतिशीलता का अभाव — कीमत प्रणाली मांग एवं पूर्ति के सन्तुलन में साधनों में पूर्ण प्रतियोगिता मान कर चलती है जबकि व्यवहार में साधनों में पूर्ण गतिशीलता का अभाव होता है।

④ आर्थिक असमानता — कीमत प्रणाली के सफल संचालन में आर्थिक असमानता बाधा उत्पन्न करती है। कम आय वालों की अपेक्षा अधिक आय वालों का साधनों पर अधिक नियन्त्रण होता है, उससे साधनों का अपनिर्देशन होता है

⑤ जन उपभोगी सार्वजनिक सेवाओं व वस्तुओं में क्रियाशीलता का अभाव — अस्पताल एवं चिकित्सा सुविधाएं शिक्षा, सड़क पुलिस, न्याय आदि ऐसी सार्वजनिक सेवाएं है जिनमें कीमत प्रणाली असफल है। कीमत प्रणाली तो सामान्यतः निजी वस्तुओं एवं सेवाओं पर ही क्रियाशील होती है और सार्वजनिक सेवाओं में यह क्रियाशील नहीं होता है

⑥ आर्थिक स्वतन्त्रता एवं उपभोक्ताओं की सार्वभौमिकता का अभाव — आर्थिक स्वतन्त्रता एवं उपभोक्ताओं की सार्वभौमिकता के अभाव के कारण कीमत प्रणाली मिथ्या सिद्ध होती है क्योंकि व्यवहारिक जीवन में सरकार के बढ़ते हस्तक्षेप से आर्थिक स्वतन्त्रता का अभाव रहता है।

⑦ व्यापार चक्र का जन्म — कीमत प्रणाली अर्थव्यवस्था व्यापार चक्रों को जन्म देती है। तेजी एवं मंदी की हालतों में आर्थिक साधनों के अपव्यय एवं दुरुपयोग को जन्म देती है। आर्थिक मन्दी और आर्थिक तेजी दोनों ही साधनों के आवंटन को दूषपूर्ण बना देती है।

Scanned with CamScanner

कीमत प्रणाली की आलोचनाएं

व्यवहारिक जीवन में स्वतंत्र कीमत यन्त्र प्रणाली के सफलता-पूर्वक काम करने में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जिससे यह स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं कर पाती है, जिससे अनेक तरह के दोषों का प्रादुर्भाव हुआ। संक्षेप में इस प्रणाली की मुख्य दोष निम्नलिखित है।

(1) सम्पन्नता के बीच निर्धनता — कीमत प्रणाली मांग और पूर्ति के अनुसार साधनों का आवंटन उन व्यक्तियों के पक्ष में करती है जिनके पास ज्यादा से ज्यादा क्रय शक्ति होती है। चूंकि अमीरों के पास अधिक क्रय शक्ति होती है इसलिए निर्धनों की अनिवार्यताओं की उपेक्षा करके अमीरों के लिए विलासिता की वस्तुओं का उत्पादन होता है। आर्न स्ट्रेची ने कहा है कि "एक ओर तो मनोरंजन व सैर करने की नावों तथा श्रृंगार गृहों की प्रचुरता होती है जबकि दूसरी ओर स्त्री पुरुष के लिए भोजन एवं घरों का भी अभाव रहता है।

(2) आर्थिक असमानता में वृद्धि — कीमत प्रणाली न केवल आय की असमानता को जन्म देती है बल्कि आर्थिक असमानता को इससे बढ़ावा भी मिलता है। कारण यह है कि कीमत प्रणाली साधनों का हस्तांतरण सम्पत्ति के स्वामित्व एवं उनकी कीमतों के आधार पर करती है।

(3) बाह्य प्रभावों की उपेक्षा — अनियन्त्रित कीमत यन्त्र बाहरी प्रभावों की उपेक्षा करता है। एक वस्तु के क्रय से अन्य क्रेताओं को अधिक लाभ या हानि हो सकती है। इसी प्रकार एक उत्पादक इस प्रकार से साधनों का उपयोग कर सकता है जिससे अन्य उत्पादकों को लाभ या हानि हो सकती है। एक उत्पादक वातावरण को दूषित बनाने वाली उत्पादन क्रिया को प्रयोग करके अन्य लोगों के लिए पर्यावरण सम्बन्धी अनेक कठिनाईयां उत्पन्न कर सकती है।

(4) अर्द्ध विकसित देशों के लिए अनुपयुक्त — अर्द्ध विकसित देशों के तीव्र विकास के लिए कीमत प्रणाली बहुत अधिक प्रभावी नहीं होती है। कारण यह है कि कीमत प्रणाली अर्द्ध विकसित देशों में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग आर्थिक विकास के लिए न करके धनी वर्गों के उपभोग के लिए करता है। यही कारण है कि समाजवादी देशों ने कृत्रिम कीमत यन्त्र को बढ़ावा देकर तेजी से विकास किया है।

(5) आय वितरण के नैतिक पक्ष की उपेक्षा — उत्पादन करने में साधनों का संयोजन करते समय महंगे साधनों को सस्ते साधनों से प्रति स्थापित किए जाने की प्रबल इच्छा होती है। अतः सस्ती मशीनों व यन्त्रों के प्रतिस्थापन से लाखों लोग बेकार होते हैं और उनकी रोजी रोटी छिन जाती है। इसके बावजूद कीमत प्रणाली इस नैतिक पहलू पर ध्यान नहीं देती।

Scanned with CamScanner

कीमत यन्त्र की सफलता की शर्तें

कीमत यन्त्र की अनेक आलोचना की गई है, लेकिन इसके बावजूद कुछ बातें हैं जो कीमत यन्त्र की सफलता की शर्तें हैं जिसमें कीमत यन्त्र सफल हो सकती है। वे शर्तें निम्न हैं

1. वस्तुओं एवं साधनों के बाजार की विद्यमानता — कीमत प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है वस्तुओं और साधनों के बाजार की विद्यमानता जहां पर वस्तुओं व सेवाओं के क्रेता विक्रेता एक दूसरे के सम्पर्क में आते हैं और उनका क्रय विक्रय करते हैं
2. मुद्रा का उपयोग — मुद्रा कीमत प्रणाली का आधार है। कीमत प्रणाली उसी समय ठीक तरह से काम कर सकती है जबकि वस्तुओं और सेवाओं का क्रय विक्रय मुद्रा के माध्यम से किया जाता है
3. प्रतियोगिता — कीमत यन्त्र की सफलता के लिए यह जरूरी है कि अर्थव्यवस्था में प्रतियोगिता होनी।
4. स्वतंत्र संचालन — कीमत यन्त्रों का स्वतंत्र संचालन होना चाहिए। राज्य का हस्तक्षेप कम से कम होना चाहिए।
5. गतिशीलता — संसाधनों में पूर्ण गतिशीलता होनी चाहिए और यह गतिशीलता अति शीघ्र होनी चाहिए।
6. सामाजिक लागतें — लागतें इस बात को दर्शाती है कि उत्पादन प्रक्रिया में समाज को कितना त्याग करना पड़ा। अतः लागतों का अनुमान लगाते समय निजी लागतों के साथ साथ सामाजिक लागतों को भी शामिल किया जाना चाहिए।
7. पूर्वानुमान — संसाधनों को आवंटित करते समय उत्पादक को प्रत्येक में अपनी वस्तु की माग के सम्बन्ध में सही पूर्वानुमान होना चाहिए।
8. समाज की आवश्यकता — मांग समाज की आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से दर्शाए परन्तु यह तभी सम्भव है जबकि आर्थिक असमानताएं एक सीमा में ही हों।
9. साधनों पर निजी स्वामित्व — जब अर्थव्यवस्था में उत्पादन साधनों एवं उपभोग वस्तुओं पर निजी स्वामित्व होता है तो उनके स्वामित्व को उनके प्रयोग एवं आवंटन की स्वतंत्रता होती है और अधिकतम ~~को~~ निजी लाभ के लिए वे साधनों का आवंटन बड़ी सतर्कता से करते हैं। निजी स्वामित्व के अभाव में कीमत यन्त्र काम नहीं कर सकता है।